International Journal of Management, IT & Engineering
Vol. 8 Issue 6, June 2018,
ISSN: 2249-0558
Impact Factor: 7.119Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

पंडित गणेश चौबे के लोकगीत संग्रह आ विषयक लेखन आ विशेषता

डॉ० बिक्रम कुमार सिंह

शोध छात्र भोजपुरी विभाग बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर बिहार विश्वविद्यालय मुजफ्फरपुर बिहार

आजीवन लोक जीवन जीएवाला आ लोक भाषा साहित्य संस्कृति से प्रेम करेवाला पंडित गणेश चौबे जी लोकरंग के सैंदर्य शास्त्री रहीं । लोकबर्ता सम्बन्धी समाग्रीयन के संग्रह संकलन आ अध्ययन उहा के उदेश्य बनल रहल । 14 वां इंडियन फॉकलोर कांग्रेस के अधिवेशन के अवसर पर उहाँ के सम्मानित करे के समय ओकर अध्यक्ष डॉक्टर जो0 हणडू चौबे जी के दुनिया के कुछ गिनल चुनल लोकबर्ता विशेषज्ञन में से एगो मनले बानी । चौबे जी जब उहाँ का नौवा वर्ग में पढ़त रही तबहिय से लोक साहित्य के अनुराग जागल , जब उहाँ का लाल बिहारी डे के फॉकटेल्स ओक बंगाल पढ़नी । मैट्रिक कइला के बाद मोतिहारी कलक्टरी नौकरी कइली ।

चौबे जी विधार्थी जीवन में ही लिक गीतों के संकलन करे लगनी । सन 1934 ई0 के भूकंप के बाद उनका कलक्टरी में नौकरी मिल गइल । ओहि जा पुस्तकालय विदेशी विद्वानों को अंग्रेजी में लिखित जीवन संबंधी ग्रन्थ पढ़नी । ओहि जा राम बहादुर शरच्चन्द्र राय के छोटा नागपुर की आदीम जातियों पर बहुत प्रकार के ग्रंथ पड़गेनी । ओह ग्रंथ से प्रेरित हो के अपना समाज के लोक जीवन में प्रचालित प्रथा रस्म रिवाज लोक अंध विश्वाससो आ लोक साहित्य के संग्रहित करे लगलन । चौबे जी के लोकगीत संग्रह के बारे में विंध्यालचल प्रसाद श्रीवास्तव लिखले बानी लोकगीतों ने उन्हें विशेषः रूप से प्रभावित किया तब से आज तक उन्होंने लगभग 1000 गीतों का संग्रह कर लिया जो लोक जीवन के विराट स्वरूप के हर पक्ष से सम्बंधित हैं । आंचलिक विविधता की इन्द्र धनुषी छटा से समन्वित हैं श्री ब्रजभूषण मिश्र जी के चौबे जी के बारे में विचार व्यक्त करत लिखने बानी –

" कलक्टरी में नौकरी कइला के चलते कलक्टरी पुस्तकालय में पंडित जी का सर जार्ज ग्रीयर्सन डॉ0 वौरियर एलविन बिलियम आर्चर डॉ0 फेलन आदि के लोक साहित्य आ संस्कृति पर लिखल ग्रंथ पढ़े के अउर मनन करे के अवसर मिलल । लोक साहित्य आ संस्कृति के अध्ययन के चलते उहाँ का फुलस्केप कागज के लगभग 7000 पृष्टन के लोकगीत , लोकगाथा , भुझउअल , कहाउत ,रस्म रेवाज लोक विश्वास आ जाती प्रथा आदि विषयक सामग्री यन के संग्रह कइनी । एह में लगभग सात हजार लोकगीत आ तीन सौ लोक कथा होइ ।

International Journal of Management, IT & Engineering
Vol. 8 Issue 6, June 2018,
ISSN: 2249-0558
Impact Factor: 7.119Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

लोक गीत विषयक लेखन-

चौबे जी द्वारा लिखित साहित्य के जवान व्योरेवार सूची हरिश्चंद्र साहित्यालेकार प्रस्तुत कइले बानी , ओ से पता चलल बा की, चौबे जी खाली 7 से 10 हजार तक के संख्या में लोकगीत के संग्रह के साथे साथे सबसे बेसी लोकगीत विषयक लेखन कइले बानी । चौबे जी के लेखन के प्रारंभ के बारे के बारे में ब्रजभूषण मिश्र जी के कथन बड़ा उचित भुझात बा " जब आदमी अध्ययनशील होला त ओकरा सोचे के शक्ति बढ़ेला । लोक जीवन से सम्बंधित अपना अध्ययन के जान समुदाय तक पहुँचावेला आ शोधी लोग खातिर लिखल शुरू कइली । चौबे जी के सबसे पहिले एगो हिंदी लेख 1945 ईस्वी में पटना का 'आरती' में प्रकाशित भइल विषय रहे 'बिहार में पानी बरसाने की विधियाँ' । अंग्रेजी के पहिला लेख

'Rain Complening rites and song in Bihar 1945'

ईस्वी में प्रकाशित भइल' । रामनगर चम्पारण के पत्रिका नंदन खातिर ब्रजकिशोर नारायण जी के अनुरोध पर इहाँ का भोजपुरी के एगो लेख लिखनी ।1948 इसबी में प्रकाशित भइल । भोजपुरी के पहिला लेख रहे 'चम्पारण के लोकगीत' ये प्रकार हिंदी अंग्रेजी आ भोजपुरी में चौबे जी के का लेखन शुरआत लोहगीत केंद्रित रहे । भोजपुरी लोकगीत के महत्व प्रतिपादित करत गणेश चौबे जी लिखले बानी-'भोजपुरी का लोकसाहित्य बहुत समृद्ध है, उसके गीत सरस आर मर्म स्पर्शी है । भोजपुरी लोकगीत की परम्परा अतिप्राचीन है । उपनयन के अनेक गीत ब्राह्मण ग्रंथो अवर गृहय सूत्रों पर आधारित है । और उनमे अरबी/ फ़ारसी के शब्दों का अभाव है । लगन गीतों में विवाह की प्राचीन मर्यादा का सुन्दर चित्रण मिलता है । ग्राम देवताओं की पूजा के गीतों में सिद्धो और नाथ पंथियों के युग का प्रभाव लक्षित होता है । उनके जतसारी गीतों में मुगलो और तुर्को की काम लिप्सा और भोजपुरी रमणियों के सतीत्व की महिमा गाई है ।

भोजपुरी लोकगीत के संग्रह आ अध्ययन (एगो संक्षिप्त सर्वेक्षण) नामक लेख में चौबे जी लोकगीत । के बारे में उद्गार व्यक्त करत लिखले बानी-'लोकगीत मानव हृदय के सहज उदगार ह' । सृष्टि का आरम्भ में जब आदमी होश समरलस, ओकारा दिल में उमंग उगल, आ ओकरा कंठ से गीत फूट निकलल तब से आजतक ऊ गीत गावट आवट बाटे । ओकरा के ऊ अपना जीवन के साथी बना लेलस आ तब से ऊ ओकरा के से रस ले अपना में

International Journal of Management, IT & Engineering
Vol. 8 Issue 6, June 2018,
ISSN: 2249-0558
Impact Factor: 7.119Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

जीवन शक्ति भर रहल बाटे । आगे चल के समाज में शिक्षा के प्रचार भइल । पढ़ल-लिखल लोग का अभिजात्य साहित्य लेखा लोकगीत में शब्द योजना अलंकार छंद विधान आ कल्पना के उड़ान न मिलल । ऊ लोकगीत के अनपढ़ आ के अटपटाँग गीत समझ के ओह पर धयान न देलस । एह तरह के लोकगीत के संग्रह आ अध्ययन बहुत दिन तक उपेक्षित रहल । "

चौबे जी भोजपुरी लोकगीतन से प्रभावित रही, येही प्रभाव के कारण उहाँ का भोजपुरी लोकगीतन के संकलन आ संग्रह बृहद पैमाना पर करत ओह पर आलोचनत्मक दृष्टि डलनी । चौबे जी भोजपुरी लोकगीतन के व्यख्या विश्लेषण के माध्यम से ओकरा उदेश्य आ विशेषता के उजागर कइनी । उहाँ के सबसे बड़ विशेषता उहाँ का व्यख्या विश्लेषण के क्रम में दोसरा भाषा के लोकगीत आ शिष्ट साहित्य से तुलनात्मक रूप में विचार करत, भोजपुरी लोकगीतन के महत्व प्रतिपादित कइला के बाटे । उदाहरण स्वरूप उहा के लेख भोजपुरी लोकगीतों का अलंकरण देखल जा सकत बा । एह आलेख में चौबे जी पहिले बाणी के अलंकरण के प्रकृति प्रदत प्रवृति पर विचार करत 'लोकगीतों के अलंकार' भेद कला गीतों के अंगवाची में अपमान- लोकगीतों में अडंग वर्णन, लोकगीतों में उरोज वर्णन, लोकगीतों में उदाहरण, जइसन उपशीर्षक से ओह पर विचार कइले बानी । चौबे जी लोकगीतन के मर्मज्ञ व्यख्याकार,विश्लेषक आ मूल्यांकन करता बानी । एकरा उदाहरण खातिर उक्त लेख के कुछ अंश जहां तहां 4से देखल जा सकत बा । अलंकार प्रकृति प्रेरित होला, एह पर विचार करत चौबे जी लिखले बानी । 'मानव में अपनी वाणी को अलंकृत करने की प्रवृति प्रकृति/प्रेरित हैं । पुरातन काल में जब उसका कंठ अपने मनोगत भावों को प्रकट करने के लिए मुखरित हुआ होगा, उसने यह भी अनुभव किया होगा की वह जो कुछ कहे, दुसरो को श्रुतिमधुर लगे और कुतूहलपूर्वक तथा प्राभवोत्पादक सिद्ध हो इसी प्रवृति ने बर्तावों को अलंकृत करने की भावना को जन्म दिया । उसने अपमान और प्रतीक अपनाये और लाक्षणिक प्रयोंगों का वयवहार आरम्भ किया । फलतः वन परान्तर में बर्बर जीवन बिताने वाली आदीम जातियों के भावयुक्त गीतों तथा सुसंस्कृत जातियों के भाव-गर्मित साहित्य में सामान रूप से हम वाणी का विलास पाते हैं ।

लोकगीतों के अलंकार भेद पर विचार करत उहाँ का ओकरा विशेषता के उजागर कइले बानी ।"काललगीतों की भाँति लोकगीत भी अलंकृति हैं, पर व अलंकार से बोझिल नहीं हैं और इनसे उनके प्रकृत सैंदर्य में किसी प्रकार की बाधा नहीं पहुँचती हैं । उनमे सादगी हैं,

International Journal of Management, IT & Engineering
Vol. 8 Issue 6, June 2018,
ISSN: 2249-0558
Impact Factor: 7.119Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

जटिलता नहीं , ये नयनाभिराम हैं , आँखों को चकचौंध करने वाला नहीं इनसे गीतों का अर्थों के सपष्टीकरण में सहायता मिलती हैं, दुरूहता नहीं आती । लोकगीतों पर दृष्टि निक्षेप करने से पता चलता है, कि उनमे मुख्यत,उपमा, रूपक प्रतीक, उत्पेक्षा और उदाहरण ही व्यवहत हुए है । यदि हम रूपक (Image) और प्रतीक (Symbol) का व्यापक अर्थ ले, जैसे डॉo एलविन और श्री आर्चन ने किया है । तो लोकगीतों में व्यवहत प्रायः सभी अलंकार इन दोनों को ही अंतर्गत आ जाते हैं । एहि लेख में कलागीत में आइल अंगवाची उपमान पर चर्चा करत चौबे जी ऋग्वेद में उषा वर्णन से शुरू करके कालिदास के पार्वती तुलसी के सीता ,जयदेव विधापति आ सूर के राधाकृष्ण केशव, के सारिका आ चन्दर वरदायी के संयोगिता के एके उपमान से तुलित पवले बानी । उहाँ का आगे लिखत बानी "दंडी के एक ही ग्रंथ के - दो स्थलों पर वसुमती तथा अवन्तिका सुन्दरी नखशिख वर्णन में पूर्णतः एक जैसे ही का प्रयोग हुआ है, जो बेहद खटकने वाली बात है । यद्धपि जयदेव के अपमानो में अपेक्षाकृत नवीनता है , फिर भी गीत - गोविन्द में, कूच के लिए ,एक स्थल को छोड़कर(जहा तालफल आया है) सर्वत्र कलशवाची शब्दों का ही व्यवहार हुआ है। सूर के पदों में सौंदर्य बोधक उपमानो की इतनी पुर्नावृति है की यदि उन्हें एक स्थान पर एकत्र कर दिया जाये तो धैर्यवान पाठक भी ऊब जायेंगे। तुलसी दास ने रामचरित्र मानस के कई स्थानों पर इस प्रकार के पिष्टपेषण की निरर्थकता अनुभव किया है और राम एवं सीता के सौंदर्य, वर्णन का का जहा भी प्रसंग आया है ।, उन्होंने प्रकारान्तर से उपमाओ की दरिद्रता स्वीकार की है। फिर भी वे उपमाओ के जाल से बच नहीं सके। उन्होंने मानस की मुख्य , चरण , नेत्र तथा हस्त के लिए कमलवाची शब्दों का इतनी बार प्रयोग किया है कि उन्हें गिणना भी कठिन है। " तबहुओ कलागीत के उपमान के खातिर अरण्यकाण्ड से उदहारण देले बानी। कला गीतन के अंगवाची उपमानन खातिर विवशता देखवला के बाद लोकगीत आ खास करके भोजपुरी लोकगीतन में पावल जायवला एक से एक अंगवाची उपमानन के चर्चा कइले बानी। लोकगीतों में अनङ्ग वर्णन के उपमान उपशीर्षक में लिखत बानी -" शिष्ट साहित्य की उपमाये अपनी पुराणी लीक पर हिचकोले कहती रहने वाली बैलगाड़ी समान है , किन्तु लोक साहित्य की उपमाये उद्दाम धारा - सी है फूल किनारो को तोड़कर अपने लिए नया मार्ग बना लेती है। लोकगीतों में यत्र - तत्र बड़ी खूबी से अंग - विशेष के वर्णन उपस्थित किये गए है। परन्तु नख सीख वर्णन की परिपाटी का अभाव सा है। तबहुओ भोजपुरी क्षेत्र में विवाह

संस्कार के अवसर पर 'अपटन ' के बीध पूरा करत जवन गीत गावल जला, ओह में नख - सीख वर्णन बा जवन चौबे जी उदहारण प्रस्तुत कइले बानी -

" मुहवा तोर बखानीला कउन बेटी जइसन दुतिया के चाँद रे।

मनमानिक हिअरा , मैं तो लाजे ना बोलूँ दोनों आड़ होइहे मिलाप रे।

हथवा तोर बखानीला कउन बेटी जइसन सोबरन के साट रे।

मनमानीक हिअरा , ……..।

पिठिया तोरा बखानीला कउन बेटी जइसन धोबिया के पाट रे

मन मानिक हिअरा ……..।

पेटवा तोरा बखानीला कउन बेटी जइसन पुरइन के पात रे।

मन मानिक हिअरा……।

जघिया तोरा बखानीला कउन बेटी, जइसन कदली के थम्ह हे ।

मन मानिक हिअरा……।

नकिया तोरा बखानीला कउन बेटी , जइसन सुगवा के ठोर रे ।

मन मानिक हिअरा……..।।

अँखिया तोरा बखानीला कउन बेटी जइसन अमवा के फाँक रे ।

मन मानिक हिअरा ……A

दत्तवा तोरा बखानीला कउन बेटी जइसन चमकेला बीजुरी।

मन मानिक हिअरा……A

सन्दर्भ ग्रंथ:--

1.डॉ॰ मुक्तश्वेर तिवारी बेसुध ((ले0)- भोजपुरी लोक्तियाँ और मुहाबरे प्रका& हिंदी परिषद चितबड़ा गाँव बलिया (¼UP) laLdj.k&1971 bZ0 ¼izFke)

2.डॉ॰ राजेशवरी शांडिल्य (¼ले0)&,गो भोजपुरी% ओकर कई गो नाँव&गाँव] भोजपुरी संLFkku , 3/9 इन्द्रपुरी, पटना-800024 सं०–पहिला, दिसम्बर -2007 ई० पृ&35

3. डॉ0 मुक्तेश्वर तिवारी बेसुध (ले) भोजपुरी लोकोक्तियों और मुहावरे, प्रका-हिन्दी परिषद, चितबड़ा गाँव बलिया (UP) संस्करण-1971 ई0 (प्रथम पृ०-25.26

4. डॉ० (श्रीमती राजेशवरी शांडिल्य (सं० -भोजपुरी लोक, अखिल भारतीय भोजपुरी परिषद्, राजश्री प्रकाशन ए-14 माल एवन्यू कॉलोनी, लखनऊ- 1 वर्ष-4 अंक - 9 -10 , दिसम्बर - जनवरी - 1992-93 (संयुक्त पृ०-17

5. आचार्य रामदेव तिवारी त्रिपाठी (स०) भोजपुरी अकादमी पत्रिका शो० भोजपुरी अकादमी बारिस-8 अंक-2 अप्रैल-जून-1987 पृ० 1से 19

6. डा अणिमा अनुरागनी स एवं स लोकरंग का सौन्दर्य शास्त्र अमिधा प्रकाशन मुज़्जफरपुर प्र० स०-2009 पृ०-44-45.

7. ब्रज भूषण मिश्र -स० कोइल प्रका दिनेश्वर मिश्र अलमस्त नगर गोटीघर साहेबगंज साल पॉचवा अंक जून -91 पृ० -11 पृ०-04- एवं-12